स्पिक मैके
वार्षिक प्रतिवेदन 2024–2025

स्पिक मैके (भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के प्रचार हेतु समाज) चैप्टर इंस्टीट्यूट ऑफ होम इकनॉमिक्स (आई एच ई), यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, शैक्षणिक वर्ष 2024–2025 के दौरान सक्रिय रूप से कार्यरत रहा। स्पिक मैके का उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं प्रचार करना है, जिसे आई. एच. ई. चैप्टर ने पूरे उत्साह और समर्पण के साथ आगे बढ़ाया। यह वर्ष विरासत 2025 श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित जीवंत सांस्कृतिक आयोजनों, नियमित साप्ताहिक बैठकों तथा विविध छात्र समुदाय की सक्रिय भागीदारी के कारण विशेष रहा। इसने आई. एच. ई के स्पिक मैके चैप्टर को एक सशक्त सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया।

वर्ष 2024–2025 के लिए नेतृत्व दल में अध्यक्ष देबोलिना दास, उपाध्यक्ष महाविश अंसारी, सचिव नंदिनी वर्मा, कोषाध्यक्ष आरती आर., संकाय संयोजिका प्रोफेसर सुनीता अग्रवाल, सह-संयोजिका डॉ. रुचिरा दास , डॉ. नीति, डॉ कोहिनूर कौर तथा दिव्यांशा शर्मा शामिल थीं। उनकी दूरदर्शिता और उत्साह सभी पहलों के उत्कृष्ट एवं समावेशी संचालन में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे।

वर्ष की शुरुआत एक अभिविन्यास कार्यक्रम से हुई, जिसका शीर्षक था –"नई सोच का प्राचीन जड़ों से जुड़ाव"। यह कार्यक्रम शुक्रवार, 8 नवम्बर 2024 को सुबह 10:45 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक इंस्टीट्यूट ऑफ होम इकनॉमिक्स (IHE) के "सम्मेलन कक्ष" में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी प्रतिभागियों को पारंपरिक परिधान पहनने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे कार्यक्रम में एक रंगीनता आई और यह हमारी सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सम्मान का प्रतीक बना।इस कार्यक्रम का उद्देश्य नवागंतुक छात्रों को स्पिक मैके (SPIC MACAY) के उद्देश्य और दृष्टिकोण से परिचित कराना था, तथा उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ना था। पदाधिकारियों ने छात्रों तथा वक्ताओं का गर्मजोशी से स्वागत किया और स्पिक मैके की स्थापना के मूल सिद्धांतों को साझा करते हुए युवाओं की भूमिका को रेखांकित किया — कि वे किस प्रकार सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। कार्यक्रम में एक वृत्तचित्र को भी प्रदर्शित किया की गया, जिसमें इस आंदोलन के राष्ट्रव्यापी और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को दर्शाया गया। चर्चाओं में सांस्कृतिक पहचान और इसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर बल दिया गया — कि किस प्रकार प्राचीन परंपराओं को आधुनिक सोच के साथ जोड़ा जा सकता है। अभिविन्यास कार्यक्रम का समापन सभी छात्रों को आगामी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करते हुए किया गया, जिससे सीखने, उत्सव और समुदाय-निर्माण की दिशा में एक सशक्त आधार तैयार हुआ।

हर शनिवार दोपहर को मॉडर्न पब्लिक स्कूल, बाराखंभा रोड में आयोजित नियमित साप्ताहिक बैठकें, स्पिक मैके की आत्मा बन गईं — जो ऊर्जा, सीखने और आपसी सहयोग से भरपूर रहीं। इन बैठकों ने कार्यक्रमों की योजना, कार्यशालाओं और आउटरीच गतिविधियों के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया। कला-आधारित कार्यशालाओं के माध्यम से छात्रों ने विभिन्न भारतीय शास्त्रीय कला रूपों को वीडियो और चर्चाओं के माध्यम से गहराई से समझा।इन सत्रों में छात्रों ने मंच संचालन, उद्घोषणा, सार्वजनिक भाषण, मंच प्रबंधन तथा सोशल मीडिया संचालन जैसी महत्वपूर्ण क्षमताओं को निखारा। टीम निर्माण गतिविधियों ने समूह में कार्य करने की भावना तथा नेतृत्व कौशल को प्रोत्साहित किया। प्रत्येक आयोजन के पश्चात आयोजित समीक्षा सत्र ने आत्ममंथन व सुधार की दिशा में योगदान दिया। ये साप्ताहिक बैठकें न केवल आयोजनों की सुचारू रूप से रूपरेखा तैयार करने में सहायक रहीं, बल्कि नए और वरिष्ठ सदस्यों में एक मजबूत जुड़ाव और अपनत्व की भावना को भी विकसित करने में महत्वपूर्ण रहीं।

विरासत एक पारंपरिक श्रृंखला है स्पिक मैके महोत्सव की, जो भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की विविधता और समृद्धि का जश्न मनाने के लिए एक सप्ताह भर चलने वाला सांस्कृतिक उत्सव है। स्पिक मैके (भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के प्रचार हेतु समाज) द्वारा इस वर्ष इंस्टिट्यूट ऑफ होम इकॉनॉमिक्स में पहली बार विरासत आयोजित की गई। विरासत 2025 श्रृंखला में कई महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजनों का आयोजन किया गया। इसकी शुरुआत 25 फरवरी 2025 को सुबह 10:30 बजे से 11:30 बजे तक सम्मेलन कक्ष में आयोजित "चारुलता" फिल्म के विशेष प्रदर्शन से हुई। सत्यजीत रे द्वारा निर्देशित इस फिल्म को एक विस्तृत परिचय के साथ प्रस्तुत किया गया, जिसमें इसके कथा-

संरचना और ऐतिहासिक महत्त्व को समझाया गया। यह प्रदर्शन स्पिक मैके के व्यापक उद्देश्य को रेखांकित करती है, जिसमें भारतीय सिनेमा विरासत का संरक्षण भी शामिल है। फिल्म की गहराई ने दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया और यह स्मरण कराया कि सिनेमा जैसी कलात्मक धरोहरों को संजोना कितना आवश्यक है।

1 मार्च 2025 को दोपहर 1:00 बजे मुख्य मंच पर आयोजित "मयूरभंज छाऊ" नृत्य प्रस्तुति इस श्रृंखला की एक प्रमुख विशेषता रही। यह प्रदर्शन प्रख्यात कलाकार राकेश साईं बाबू (बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार से सम्मानित) द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें ओडिशा की इस प्राचीन नृत्य-नाट्य शैली की अद्भुत शारीरिक क्षमता और कथा-वाचन परंपरा को दर्शाया गया।नृत्य की जटिल नृत्यरचना, रंगीन परिधानों और पौराणिक कथाओं के साथ युद्ध-कौशल के अद्भुत समन्वय ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस आयोजन की संभार-तंत्र, मंच-सज्जा और दर्शक समन्वयन की जिम्मेदारी छात्र स्वयंसेवकों द्वारा कुशलतापूर्वक निभाई गई।

विरासत श्रृंखला का समापन 6 मार्च 2025 को सुबह 9:00 बजे "ऐतिहासिक स्थल भ्रमण " के साथ हुआ, जिसका आयोजन महरौली पुरातात्विक उद्यान में किया गया।इस भ्रमण का नेतृत्व सुप्रसिद्ध इतिहासकार सुश्री आराधना सिन्हा ने किया, जिन्होंने दिल्ली सल्तनत और मुग़ल कालीन स्मारकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जीवंत वर्णन शैली में प्रस्तुत किया। इस अनुभव ने शिक्षा और खोज को एक साथ जोड़ते हुए प्रतिभागियों को भारत की समृद्ध स्थापत्य और सांस्कृतिक विरासत से जोड़ा। छात्र टीम ने पंजीकरण और सुरक्षा को अत्यंत दक्षता से संभाला। यह श्रृंखला न केवल सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तक सीमित रही, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक विरासत के समग्र अध्ययन व संरक्षण की ओर समाज की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

इस सांस्कृतिक समिति की मजबूती मुख्य रूप से इसके छात्र सदस्यों की प्रतिबद्धता और प्रतिभा पर आधारित है। छात्रों ने विभिन्न भूमिकाएँ निभाईं — जैसे कि कार्यक्रम की एंकरिंग एवं संचालन, रचनात्मक डिज़ाइन और प्रचार (पोस्टर, सोशल मीडिया के ज़रिए), दस्तावेज़ीकरण और फोटोग्राफी, लॉजिस्टिक्स और समन्वय (बैकस्टेज, बैठने की व्यवस्था आदि), तथा नवागंतुकों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका। इस सक्रिय सहभागिता ने छात्रों को व्यवहारिक कौशल, संस्कृति के प्रति जागरूकता, और व्यावसायिक दक्षता विकसित करने में मदद की, साथ ही उन्हें नेतृत्व और सहयोग की भावना से जोड़ते हुए एक जीवंत सांस्कृतिक समुदाय का हिस्सा भी बनाया।

समिति की गतिविधियों ने समुदाय से गहरी जुड़ाव और व्यापक प्रभाव स्थापित किया, जिसमें विभिन्न विभागों और शैक्षणिक वर्षों के छात्रों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। संकाय सदस्यों ने भी भारतीय शास्त्रीय कलाओं और सांस्कृतिक विरासत के प्रति छात्रों की नवोदित रुचि की सराहना की, और स्वयं भी आयोजनों में भाग लेकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।प्रत्येक कार्यक्रम के बाद प्राप्त प्रतिक्रिया में निरंतर समिति की शैक्षणिक गुणवत्ता, सहज एवं स्वागतपूर्ण वातावरण, और उत्तम आयोजन प्रबंधन की सराहना की गई।कई छात्रों ने बताया कि इन आयोजनों ने उनके भीतर अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व को बढ़ाया है तथा भारतीय परंपराओं से और गहराई से जुड़ने की प्रेरणा भी दी है।

स्पिक मैके आई. एच. ई. चैप्टर ने आई. एच. ई. की प्राचार्या महोदया प्रोफेसर राधिका बख्शी का उनके निरंतर सहयोग एवं समर्थन के लिए हार्दिक आभार प्रकट किया। इसके साथ ही प्रोफेसर सुनीता अग्रवाल को संकाय संयोजिका एवं अन्य संकाय सदस्य को उनके मार्गदर्शन हेतु, सभी आमंत्रित कलाकारों एवं विषय-विशेषज्ञों को उनके अमूल्य योगदान हेतु, तथा विशेष रूप से समिति के छात्र सदस्यों एवं स्वयंसेवकों को उनकी निष्ठा, परिश्रम और समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया।सभी के सामूहिक प्रयासों ने भविष्य की सांस्कृतिक पहलों के लिए एक सुदृढ़ एवं प्रेरणादायी आधार प्रदान किया है।

अंत में, शैक्षणिक सत्र 2024–2025, आई. एच. ई. में स्पिक मैके के लिए एक उल्लेखनीय एवं प्रेरणादायी कालखंड सिद्ध हुआ। जीवंत अभिविन्यास कार्यक्रम, उत्साहपूर्ण साप्ताहिक बैठकों, और सुसंगठित विरासत श्रृंखला के माध्यम से समिति ने न केवल छात्रों में, बल्कि समूचे कॉलेज समुदाय में भारतीय शास्त्रीय कलाओं के प्रति एक बार फिर गहरी रुचि जागृत की। परंपरा और युवाओं के जोश का यह समन्वय एक समृद्ध और सक्रिय सांस्कृतिक वातावरण के निर्माण में सहायक

बना। समिति ने अपने सभी योगदानकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया और छात्रों को भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं उत्सव में सक्रिय भागीदारी के लिए आमंत्रित किया।

अभिविन्यास कार्यक्रम

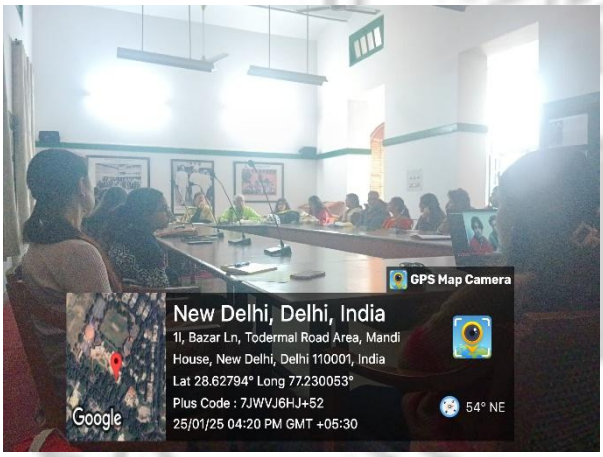

साप्ताहिक बैठकें एवं अन्य कार्यक्रम

विरासत श्रृंखला2025 के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम

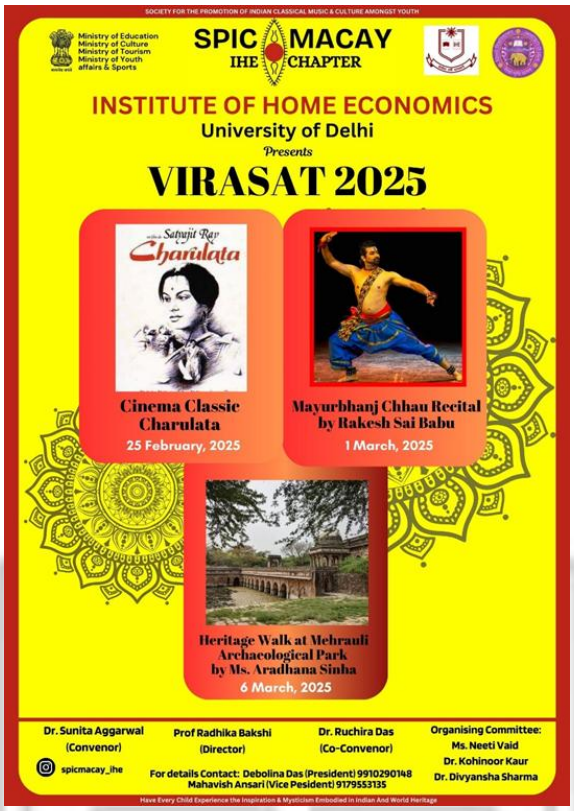

सिनेमा क्लासिक: चारुलता

मयूरभंज छाऊ नृत्य प्रस्तुति

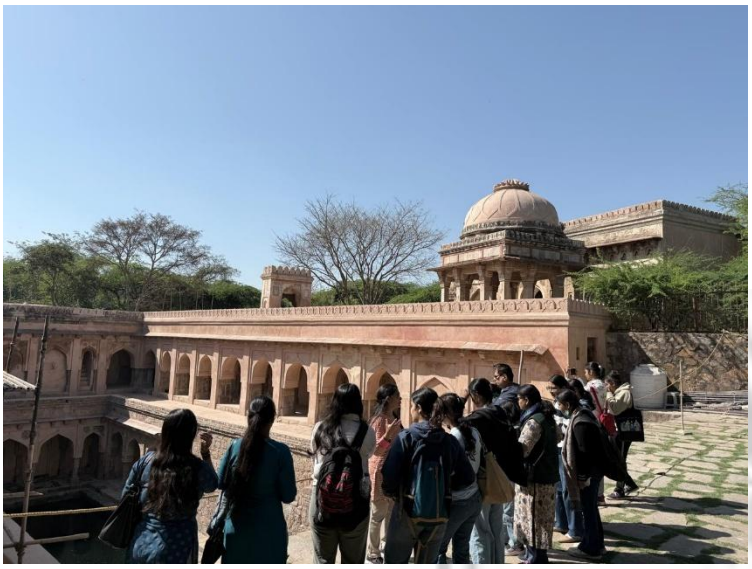

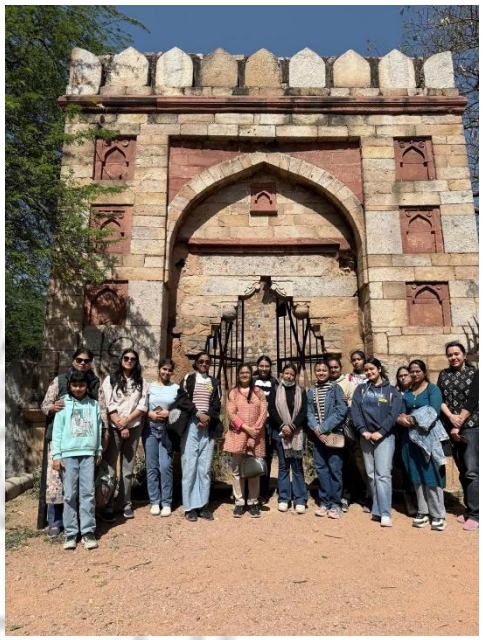

ऐतिहासिक स्थल भ्रमण: महरौली पुरातात्विक उद्यान

SPIC MACAY

Annual Report 2024–2025

The Institute has become an active partner of SPIC MACAY (Society for the promotion of Indian Classical Music and Culture amongst Youth) during the academic year 2024-25. As per UGC mandate, a Spic Macay Heritage club has been established at the Institute, that actively involved in pursuing the mission of the society to preserve and propagate India's rich cultural heritage among the youth of the country. The year was marked by dynamic events under the flagship VIRASAT 2025 series, consistent weekly meetings, and strong participation from the diverse student body, positioning the Spic Macay IHE chapter as a vital, vibrant cultural hub.

The leadership for 2024-2025 included Student Council- President Debolina Das, Vice President Mahavish Ansari, Secretary Nandini Verma, Treasurer Arathi R. and Faculty- Convenor Prof. Sunita Aggarwal, Co-convenor Dr. Ruchira Das and faculty members Ms. Neeti Vaid, Dr Kohinoor Kaur and Dr Divyansha Sharma. Their vision and enthusiasm were crucial to the excellent and inclusive execution of all initiatives undertaken by the Spic Macay IHE chapter.

The year commenced with an Orientation Programme titled “Connecting the New Mind to Ancient Roots” held on Friday, 8th November 2024, from 10:45 AM to 12:00 Noon in the Conference Room at IHE. Attendees were encouraged to wear ethnic attire. This event aimed to introduce students to SPIC MACAY's mission and foster a connection with Indian classical music, dance, and cultural traditions. Office bearers welcomed participants and explained SPIC MACAY's founding principles, highlighting the role of youth in preserving cultural legacies. The speakers from Spic Macay included Mr. Rakesh Giri, Mr Arjun Sahay, Mr Gitish karki, Manvi Jain, Shruti Kumari who introduced the working of Spic Macay and shared their experiences with the students. A documentary showcased the movement's nationwide and international impact. The ethnic attire added vibrancy and symbolized respect for traditions. Discussions covered cultural identity and relevance, bridging ancient roots with modern sensibilities. The orientation concluded by encouraging active participation in upcoming events, setting a stage for learning, celebration, and community-building.

Consistent Weekly Saturday Meetings, held every Saturday afternoon in Modern public school Barakhamba road, became the heartbeat of SPIC MACAY infusing energy, learning, and camaraderie. These served as a platform for brainstorming event ideas, workshops, and outreach.

Art form workshops explored diverse classical forms through videos and discussions. Students honed crucial skills like anchoring, public speaking, stage management, and social media engagement. Team bonding activities nurtured teamwork and leadership. Event debriefs allowed reflection for continuous improvement. These meetings were essential for smooth event execution and cultivating a strong sense of belonging, welcoming both new and senior members.

VIRASAT is a traditional series of SPIC MACAY Festival, a week-long cultural extravaganza to celebrate the variety and richness of Indian Cultural Heritage. SPIC MACAY -Institute of Home Economics organized VIRASAT for the first time this year. It featured significant cultural events. It began with a special screening of a classic "Charulata" on 25th February 2025, from 10:30 to 11:30 AM in the Conference Room. Satyajit Ray's film was presented with an insightful introduction on its narrative and historical significance. This

screening highlighted SPIC MACAY's broader mandate, including Indian cinema heritage. The film's depth captivated the audience, reinforcing the importance of preserving cinematic treasures. Another major highlight of the Virasat Series was Mayurbhanj Chhau Recital on 1st March 2025, at 1:00 PM on the Main Stage. Performed by acclaimed artist Rakesh Sai Babu, a Bismillah Khan Yuva Puraskar awardee, the recital showcased the extraordinary physicality and storytelling of this ancient dance-drama from Odisha. The performance mesmerized the audience with its intricate choreography and vibrant costumes, blending martial techniques with mythological narratives. Student volunteers managed logistics, stage setup, and audience coordination. The VIRASAT series culminated with a Heritage Walk at Mehrauli Archaeological Park on 6th March 2025, starting at 9:00 AM. Guided by renowned historian Ms. Aradhna Sinha, the walk explored monuments from the Sultanate and Mughal periods, it was an intimate experience combining education and exploration. Ms. Sinha's storytelling brought architectural marvels to life, contextualizing them within India's history. This initiative showed the society's commitment to holistic cultural education, including tangible heritage conservation. The student team efficiently handled registrations and safety protocols.

The society's strength relies heavily on the dedication and talents of its student members. Students took on diverse roles, including Event Hosting and Anchoring, Creative Design and Promotion (posters, social media), Documentation and Photography, Logistics and Coordination (backstage, seating), and Mentorship for newcomers. This involvement empowered students to develop soft skills, cultural literacy, and professional competence.

The society's activities had significant Community Engagement and Impact, attracting diverse attendees from various departments and academic years. Faculty members appreciated the renewed interest in classical arts and heritage, often participating and encouraging students.

Feedback consistently praised the educational value, welcoming environment, and seamless organization of events. Many students reported increased pride in their cultural identity and a desire for deeper engagement with Indian traditions.

The SPIC MACAY IHE Chapter expressed heartfelt thanks to the Principal of IHE for unwavering support, Faculty members for guidance, guest artists and experts for their contributions, and especially the student members and volunteers for their hard work. Their collective efforts have laid a strong foundation for future cultural pursuits.

In conclusion, the 2024–2025 academic year was a landmark period for SPIC MACAY at IHE. Through its vibrant orientation, engaging weekly meetings, and the curated VIRASAT series, the society successfully rekindled interest in Indian classical arts among students and the larger college community. The synergy of tradition and youthful enthusiasm has created a thriving cultural ecosystem. The chapter thanked all contributors and invited students to participate in preserving and celebrating India's cultural heritage.

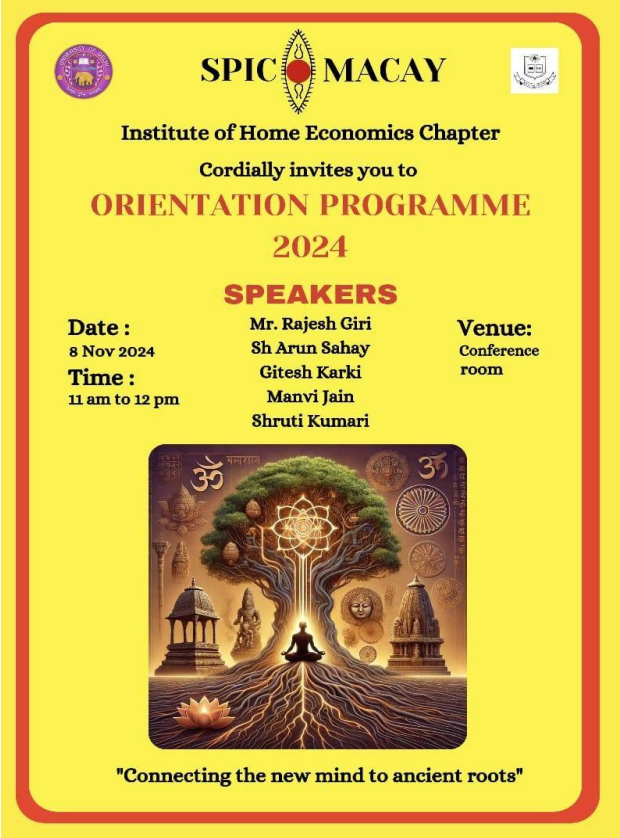

ORIENTATION PROGRAMME

VIRASAT '25

CINEMA CLASSIC: CHARULATA

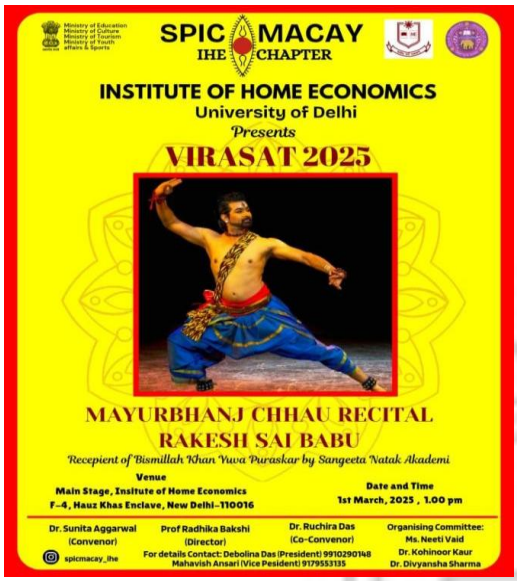

MAYURBHAJ CHHAU RECITAL

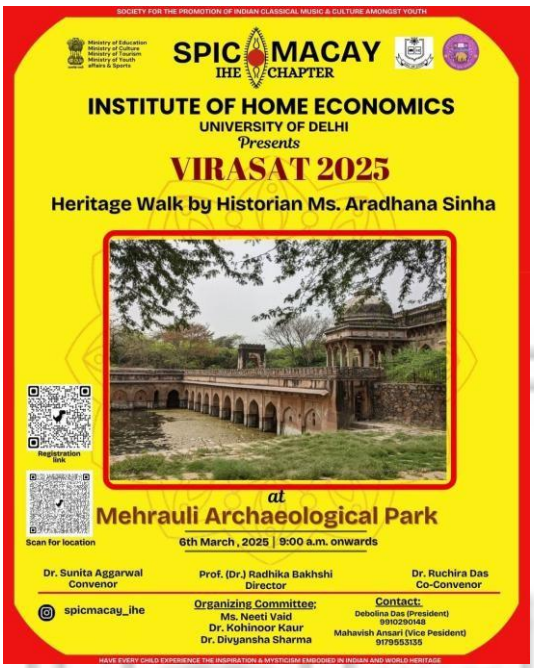

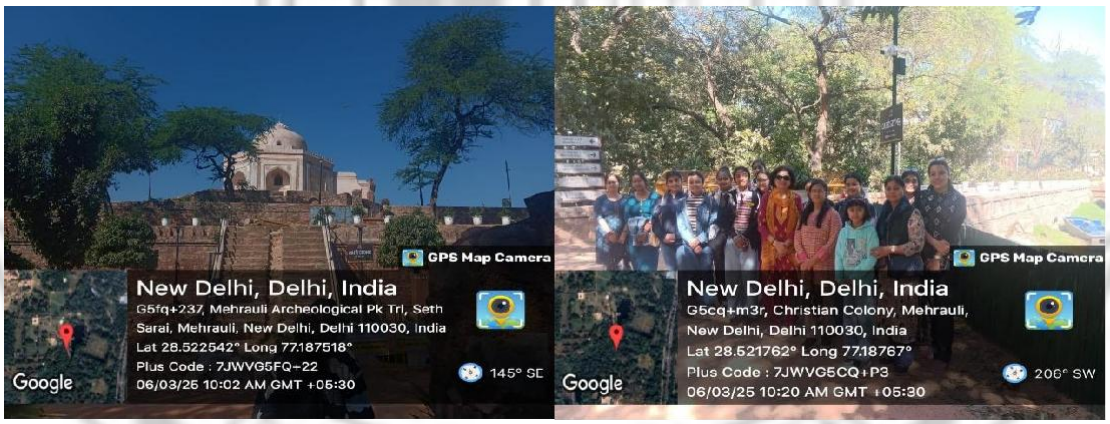

HERITAGE WALK: MEHRAULI ARCHAEOLOGICAL PA